ॐ नमो भगवते वासुदेवाय्

प्रथमो अध्यायः

अर्जुन विषाद योग

कर्म की यह भूमि संजय, धर्म का यह क्षेत्र है।
हा, प्रबल दुर्देव समरांगण बना कुरूक्षेत्र है।। 01

पाण्डु पुत्रों ने प्रबल उत्तेजना में क्या किया।
प्रिय सुयोधन ने उन्हें क्या वांछित उत्तर दिया।। 02

दिव्य नेत्रों से समर में ध्यान आकर्षण किया।
धन्य हो संजय गये, यदुवेश ने दर्शन दिया।। 03

कह रहे युवराज गुरुवर, देखिए इस व्यूह को।
सज्जित किया है पाण्डवों ने, कैसे सैन्य समूह को।। 04

आप ही रक्षा करें, अब कौरवों के दैन्य की।
सूझती सीमा नहीं है, द्रुपद सुत के सैन्य की।। 05

वीर काशीराज पुरूजित द्रुपद कुन्ती भोज है।
सैव्य अभिमन्यु में अर्जुन, भीम के सम ओज है।। 06

धृष्ट केतु उत्तमौजा सात्यकि व विराट है।
युधामन्यु आदि के संग द्वारिका सम्राट है।। 07

इन सभी दुर्धर्ष वीरों का पराक्रम गेय है।
प्रबल अविचल वज्रसम दर्शित सभी अजेय है।। 08

अब हमारे पक्ष का भी मान्यवर संज्ञान लें।
यूथ पति बलवान नायक कौन हैं सब जान लें।। 09

कर्ण और विकर्ण के संग वीर कृप आचार्य हैं।
भूरिश्रव हैं, अश्वथामा शाक्ति के भण्डार हैं।। 10

अरु गरजते सिंधु सम सब पर पितामह आर्य हैं।
मोड़ पाया अब तलक जिनकी न कोई धार है।। 11

है परम सौभाग्य गुरुवर कौरवों की ओर हैं।
आपके ही हाथ में संग्राम की अब डोर है।। 12

शूरवीर अनेक जिनमें युद्ध का उन्माद है।
भर रहे हुंकार करते मेघ के सम नाद है।। 13

है अपरिमित बल हमारा जब तलक ये मित्र है।
और सेनापति पितामह भीष्म गंगा पुत्र है।। 14

शस्त्र पण्डित को कहूँ कैसे कि रण में क्या करें।
आप सब मिलकर पितामह भीष्म की रक्षा करें।। 15

कर रहे थे वार्ता गुरु शिष्य जब उद्दाम में।
सिंह गर्जन सा हुआ, उस बीच ही संग्राम में।। 16

चौंक कर देखा सुयोधन ने पितामह भीष्म को।
शंख धवनि दहला रही थी, दुर्ग के प्राचीर को।। 17

शंख भेरी नाद गोमुख आदि सब बजने लगे।
अश्व रोही थाप पर मृदंग की चलने लगे।। 18

दिव्य रथ में शुभ्र अश्वों की संभाले रास है।
रथी कुन्ती पुत्र के हित सारथी ब्रजराज है।। 19

अब भयानक शंख ध्वनि से भीम रण में घूमते थे।
पोन्ड्रु नामक शंख से दिगपाल सारे गूंजते थे।। 20

देवदत्त, अनन्त, विजय, सुघोश, मणि पुश्पक बजे।
कर्ण भेदी तुमुल ध्वनि से, आर्त हो दिग्गज हिले।। 21

पाण्डवों के पक्ष में थे शंख ध्वनि सब कर रहे।
वैरियों के पक्ष का उन्माद कातर कर रहे।। 22

दोहा- केशव केशव कह उठा हर एक का मन मोर।
पार्थ सारथी ने किया, पांचजन्य का शोर।।

पार्थ रथ के विजय ध्वज पर अंजनी के लाल हैं।
जो अतुल बलधाम हैं, अरु काल के भी काल हैं।। 23

कह उठे यों पार्थ केशव, ज्ञान हमको दीजिए।
कौन द्वेषी या हितैषी जान लेने दीजिए।। 24

आपको दुष्कर नहीं कुछ भक्त का यों हित करें।
मध्य में रण भूमि के, रथ रोक स्थापित करें।। 25

मंद स्मित हास्य से कौन्तेय को लक्षित किया।
सैनिकों की संधि में रथ रोक स्थापित किया।। 26

द्वन्द्व पक्षों को निरख चित्रस्थ अर्जुन रह गये।
भावनाओं के हृदय में तीव्रतम अंकुर जगे।। 27

अब सुनो नर श्रेष्ठ संजय ने कही आगे कथा।
किस तरह कुरूक्षेत्र में, कौन्तेय को व्यापी व्यथा।। 28

देख अर्जुन ये तुम्हारे भ्रात हैं, और तात हैं।
खींच लाये युद्ध में, इनको इन्हीं के पाप हैं।। 29

और जो भी देखना है, देख अंतिम बार लो।
धर्म रक्षा के लिए फिर हाथ में हथियार लो।। 30

कह के यों वसुदैव के सुत, सौम्य मूरत हो गये।
किन्तु अर्जुन के दृगांचल अश्रु पूरित हो गये।। 31

फिर उठाई दृष्टि तो देखा पितामह हैं खड़े।
गोद जिनकी खेलने को, कौरवों से नित लड़े।। 32

वृद्ध कुल गुरु ब्रह्म के सम वीर कृपआचार्य हैं।
शास्त्र पंडित प्राण से प्रिय पूज्य द्रोणाचार्य हैं।। 33

सूत के सुत कर्ण रथ की, जो संभाले रास हैं।
शाल्य मामा का हृदय तो पाण्डवों का वास है।। 34

और फिर देखा सुयोधन के सहित शत भ्रात हैं।
अनुज अग्रज रक्त कुल के तात की सौगात हैं।। 35

हां महापातक है अर्जुन इनसे जो संग्राम हो।
रक्त से ही रक्त जूझे, नष्ट कुल का नाम हो।। 36

मानता हूँ मोहवश ये युद्ध में संन्नद्ध हैं।
पाण्डु के कुल रक्त, रक्षित हैं, सदैव अवध्य हैं।। 37

सोच कर ही कांपता हूँ, कर भयानक कल्पना।
कुल बंधुओं की लाश पर है, राज्य सुख की कामना।। 38

हां पृथा के पुत्र तू कुल नाश का कारण हुआ।
क्या इसी के हेतु ही, गाण्डीव का धारण हुआ।। 39

कृष्ण, कृष्णा भी नहीं चाहेगी इस परिणाम को।
राज्य के बदले स्वजन जायें सभी सुरधाम को।। 40

स्वजन ही तो राज्य सुख के भोग का आधार है।
इन्हें खोकर राज्य क्या जीवन ही बंटाधार है।। 41

मारकर इनको महीपति भी बनूँ सविकार है।
लोक क्या त्रैलोक्य के भी राज्य को धिक्कार है।। 42

नष्ट हो कुल वंश तो, कुलधर्म का भी नाश है।
धर्म क्षय होते ही बढ़ता पाप में विश्वास है।। 43

पाप की छाया में रह कुल कामिनी कामान्ध हो।
कामवश हों पतित, संकर वर्ण की सन्तान हों।। 44

वर्ण संकर श्राद्ध तर्पण, पिण्ड या जलदान दे।
स्वर्ग गामी पूज्य पितरों को नरक अवसान दे।। 45

नष्ट हो कुल धर्म तो, केशव कहां अवकाश है।
युग युगान्तर तक मनुज करता नरक में वास है।। 46

मूर्ख जन की भांति हम, ये कर रहे क्या कर्म हैं।
राज्य के हित बंधु से, लड़ना कहां का धर्म है।। 47

पुण्य है मर कर मैं यदि कुल धर्म की रक्षा करूँ,
धर्म रक्षित पूर्ण यदि कुरूवंश की इच्छा करूँ।। 48

मैं नहीं धारण करूँगा, हाथ में गाण्डीव को।
मुक्त कर दें देह से, वे पार्थ ही के जीव को।। 49

कहते हुये कुन्ती सुअन का कंठ कुंठित हो गया।
भावना में युद्ध का आवेग मानों सो गया।। 50

नहीं माधव, नहीं कह कर व्यथित अर्जुन हो गये।
पृष्ठ में रथ भाग के, जाकर अवस्थित हो गये।। 51

ॐ इति श्री कृष्णार्जुन सम्वाद अर्जुन विषाद
योगनाम् प्रथम अध्याय समाप्त